

# Sankat Mochan Ashtak | संकट मोचन अष्टक

ChalisaOnline.com

## ॥ हनुमानाष्टक ॥

बाल समय रवि भक्षी लियो तब,  
तीनहुं लोक भयो अंधियारों ।  
ताहि सों त्रास भयो जग को,  
यह संकट काहु सों जात न टारो ।  
देवन आनि करी बिनती तब,  
छाड़ी दियो रवि कष्ट निवारो ।  
को नहीं जानत है जग में कपि,  
संकटमोचन नाम तिहारो ॥ १ ॥

बालि की त्रास कपीस बसैं गिरि,  
जात महाप्रभु पंथ निहारो ।  
चौंकि महामुनि साप दियो तब,  
चाहिए कौन बिचार बिचारो ।  
कैद्विज रूप लिवाय महाप्रभु,  
सो तुम दास के सोक निवारो ॥ २ ॥

अंगद के संग लेन गए सिय,  
खोज कपीस यह बैन उचारो ।  
जीवत ना बचिहौ हम सो जु,  
बिना सुधि लाये इहाँ पगु धारो ।  
हेरी थके तट सिन्धु सबै तब,  
लाए सिया-सुधि प्राण उबारो ॥ ३ ॥

रावण त्रास दई सिय को सब,  
राक्षसी सों कही सोक निवारो ।  
ताहि समय हनुमान महाप्रभु,  
जाए महा रजनीचर मारो ।

चाहत सीय असोक सों आगि सु,  
दै प्रभुमुद्रिका सोक निवारो ॥ ४ ॥

बान लग्यो उर लछिमन के तब,  
प्राण तजे सुत रावन मारो ।  
लै गृह बैद्य सुषेन समेत,  
तबै गिरि द्रोण सु बीर उपारो ।  
आनि सजीवन हाथ दई तब,  
लछिमन के तुम प्रान उबारो ॥ ५ ॥

रावन युद्ध अजान कियो तब,  
नाग कि फाँस सबै सिर डारो ।  
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल,  
मोह भयो यह संकट भारो ।  
आनि खगेस तबै हनुमान जु,  
बंधन काटि सुत्रास निवारो ॥ ६ ॥

बंधु समेत जबै अहिरावन,  
लै रघुनाथ पताल सिधारो ।  
देबिहिं पूजि भलि विधि सों बलि,  
देउ सबै मिलि मन्त्र विचारो ।  
जाय सहाय भयो तब ही,  
अहिरावन सैन्य समेत संहारो ॥ ७ ॥

काज किये बड़ देवन के तुम,  
बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।  
कौन सो संकट मोर गरीब को,  
जो तुमसे नहिं जात है टारो ।  
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु,  
जो कछु संकट होय हमारो ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

लाल देह लाली लसे,  
अरु धरि लाल लंगूर ।  
वज्र देह दानव दलन,  
जय जय जय कपि सूर ॥

[ChalisaOnline.com](http://ChalisaOnline.com)